



***Dr. REETU RAJ***

*Assistant Professor*

*Department of HISTORY*

*RAJA SINGH COLLEGE SIWAN*

*(Jai Prakash University Chapra)*

*Lecture Notes on* **“\_चोल साम्राज्य” (Lecture - 2)**

*(for TDC Part 2 HISTORY HONOURS)*

## चोल साम्राज्य ( 9वीं सदी A D से 12वीं सदी A D तक) : बाद के चोल

### राजराजा चोल II 1150 -1173 A D

कुल्लोथुंगा चोल III ने राजराजा चोल को अपना वारिस 1146 A D मे बनाया | उसका पूरा नियंत्रण कलिंग, वेंगी, चेरा, पाण्ड्य आदि के क्षेत्रों पर था और इसने श्रीलंका को भी हमला किया परंतु इसके प्रभुत्व के अंतिम सालों में इसके साम्राज्य, जो पहले पाण्ड्य का क्षेत्र था ने राजनैतिक अशांति देखी |उसके गुजर जाने से पहले, उसने राजाधिराज चोल II को 1163 A D में अपना वारिस बना दिया | इसका उत्तराधिकारी राजाधिराज चोल II बना |

### राजाधिराज चोल II 1166 A D – 1178 A D

राजाधिराज चोल II, राजराजा चोल II का उत्तराधिकारी बना | इसका शासन काल में चोल राज्य को आगे के दोषों के लिए जाना गया जिसमें पाण्ड्य के बीच आम जागीरदारों का आधिपत्य था | पाण्ड्य के बीच राजनैतिक युद्ध हो गया जिसमे चोलाओं के दखलंदाज़ी व देखरेख की आवश्यकता पड़ी | परंतु पाण्ड्य को प्रसिद्धि मिलने शुरू हो गई और केंद्र चोल राज्य

धीरे धीरे कमजोर पड़ने लगे | 1178 A D में कुलोथूङ्गा चोल II, राजराजा चोल का उत्तराधिकारी बना |

## कुलोत्थुंगा चोल III 1178 -1218 A D

कुलोत्थुंगा चोल III वेनाद के चेराओं, मदुरै में पाण्ड्य, श्रीलंका के सिंहला राजाओं और मैसूर के होयसलाओं को बंदी बनाने में सक्षम हुआ | सदी ने घुमाव लिया और चोल साम्राज्य के दस्ता युक्त राजा जतवर्मन कुलसेकरन | ने चोलाओं के विरूद्ध विद्रोह किया और साल 1290 में मदुरा राजगद्दी पर जीत हासिल की | चोलाओं ने उस पर आक्रमण किया और मदुरै को हथिया लिया | जतवर्मन कुलसेकरन | ने अपनी पत्नी व बेटे के साथ चोल राजा कुलोत्थुंगा के सामने हथियार डाल दिये और उसके आत्मसमर्पण के बाद , वह अपनी राजधानी दोबारा गया | परंतु इसके दौरान, मदुरै में पहले पाण्ड्य का राज्याभिषेक भवन नष्ट हो गया और इसमें वे तमाम दस्तावेज भी नष्ट हो गए जिनमें पाण्ड्य की पहले की कुछ जानकारी थी | इस हमले का बदला लेने के लिए कुलसेकरन के छोटे भाई मारवर्मन सुंदरा पाण्ड्य, जो 1216 A D में शासन में आया, ने चोल राज्य पर आक्रमण कर दिया | सुंदरा पाण्ड्य के राजाओं

ने चोल राजाओं के थंजौर और उरईयूर के शहरों पर कब्जा कर लिया और चोल राजाओं को देश से निकाल दिया |उसकी सेना ने चिदम्बरम तक की पद यात्रा की और उसकी विजय की याद में चिदम्बरम मंदिर में तुलाभारम किया और उसके वजन के बराबर धन का दान दिया | परंतु, चोलाओं के ऊपर सुंदर पाण्ड्य की विजय के लिए होयसला सेना ने सरी रंगापट्टम की ओर पदयात्रा की | होयसला राजा वीरा बाल्लला III के दाखल के बाद चोल राज्यों को लौटा दिया गया परंतु, अब चोलाओं ने सुंदर पाण्ड्य का आधिपत्य स्वीकार कर लिया | यह द्वितीय पाण्ड्य साम्राज्य का पुनः जागरण और शक्तिशाली चोल सत्ता का पतन था |

## **राजराजा चोल III 1216-1256 A D**

जुलाई 1216 में जब राजाराज चोल III की सत्ता आई , पूर्व चोलाओं की तुलना में चोल राज्य एक संक्षिप्त प्रांत था | पाण्ड्य का दक्षिण और वेंगी में अहम नियंत्रण था और दूसरे क्षेत्र होयसलाओं के अंदर थे | पाण्ड्य की सेना ने चोल राजधानी में प्रवेश कर लिया और राजराजा चोल III भाग गए | उन्हें सेंदमंगलम में कैद कर लिया गया | होयसला के राजा नरसिंहा ने दाखल डाला और तभी चोल राजा को रिहा किया

गया | राजराजा चोल III ने अपने बेटे राजेन्द्र चोल को 1246 A D में वारिस बनाया |

## **राजेन्द्र चोल III 1246- 1280 A D**

राजेन्द्र चोल की प्रभुता 1246 A D मे आई | उसने चोल राज्यों के तेज़ी से हो रहे पतन को रोकना चाहा पर इस समय होयसला विरोधात्मक हो गए थे और पाण्ड्य प्रभावशाली बन गए थे | चोल राज्य का पतन राजेन्द्र चोल के साथ हो गया |

References: Internet & Competitive books.